













# विकसित राष्ट्र के संकल्प को पूरा करने के लिये करें मतदान : पंकज

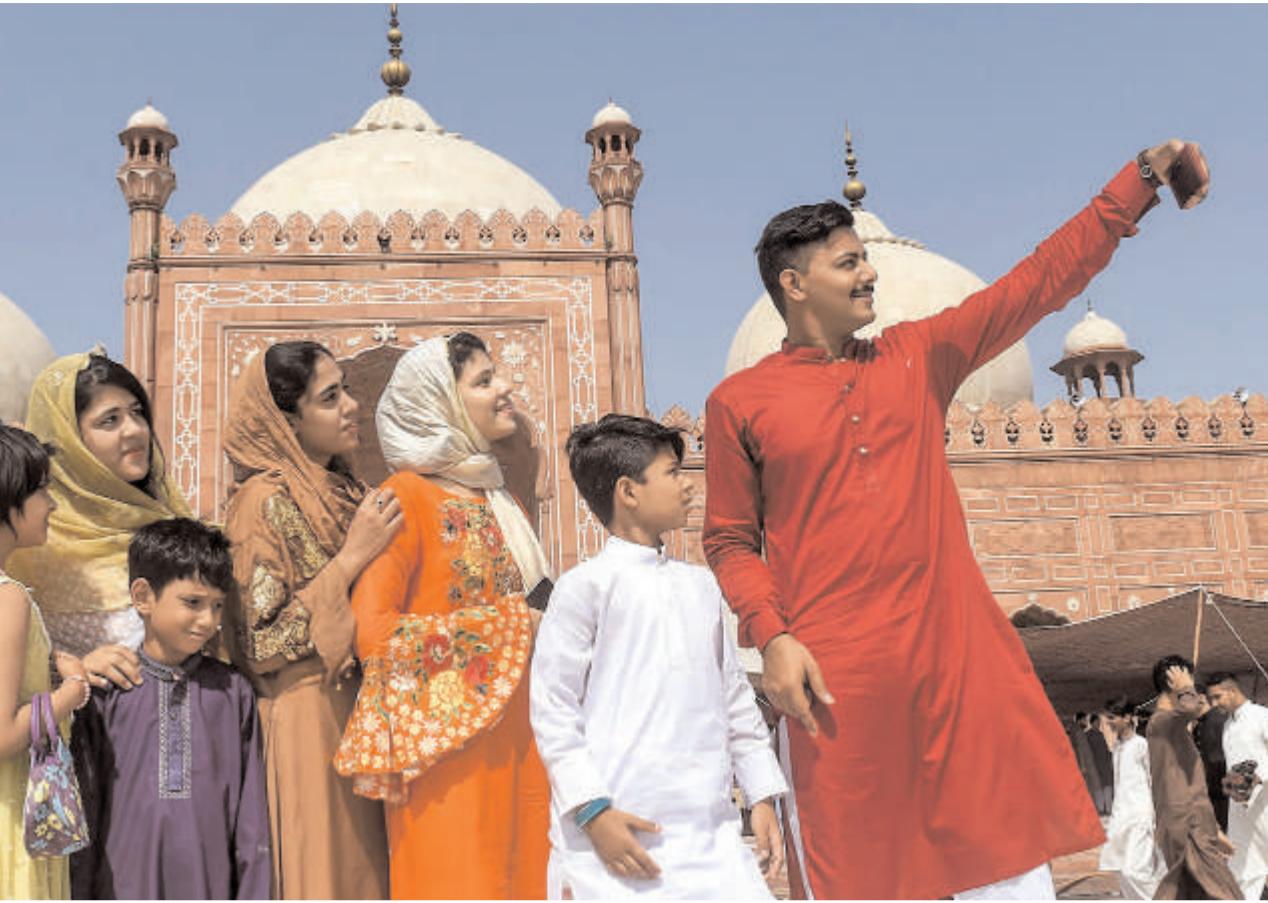
अवधनामा संवाददाता



लखनऊ। भाजपा ने देश में विकास करने के साथ समाज को जोड़ने का जो अभूतपूर्व कार्य किया है उसका जीता जगत प्रमाण अयोध्या जी में श्री राम मंदिर का निर्माण है। आज हम लखनऊ के लोग करते हैं हमारा शहर अयोध्या जी के पास है।

प्रधानमंत्री मोदी जी और मुख्यमंत्री योगी जी के नेतृत्व में हमारी पहचान को सुरक्षित और मर्दियों को संस्कृति कर राजनामा को जोड़ने का जो हो रहा है वो आज से पहले हमारे देश में कभी नहीं हुआ। इसी का असर है कि आज हमारी पार्टी के विकासी भी मंदिर जारी हैं, ये परिवर्तन नहीं तो और क्या है? यह बातें बुधवार को रास्ते मंत्री और संवाद राजनामा सिंह के चुनाव प्रवार के दैशन जनसम्पर्क अभियान में भाजपा प्रदेश





## मुसलमानों का पवित्र त्योहार है ईद-उल-फितर

ईद-उल-फितर दरअसल दो शब्द हैं ईद और फितर। असल में ईद के साथ फितर को जोड़े जाने का एक खास मकसद है। वह मकसद है रमजान में जरूरी की गई लकावटों को खत्म करने का ऐलान। साथ ही छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सबकी ईद हो जाना। यह नहीं कि पैसे वालों ने, साधन-संपन्न लोगों ने रंगारंग, तड़क-भड़क के साथ त्योहार मना लिया व गरीब-गुरबा मुंह देखते रह गए। शब्द फितर के मायने चीरने, घाक करने के हैं और ईद-उल-फितर उन तमाम लकावटों को भी घाक कर देती है, जो रमजान में लगा दी गई थीं। जैसे रमजान में दिन के समय खाना-पीना व अन्य कई बातों से रोक दिया जाता है। ईद के बाद आप सामाज्य दिनों की तरह दिन में खा-पी सकते हैं।



करते हैं। वह शब्द-कद्र की रात को सारी रात जग कर अल्हार की इबादत करते हैं।

### रमजान क्या है?

रमजान महीने का नाम है, जिस प्रकार हिंदी महीने चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, सावन आदि हैं। मुस्लिम महीने मुहर्रम, सफ़ा, रबीउल अव्वल, रबीउल अद्वितीय, जमादी-उल-अव्वल, जमादी उल अद्वितीय, रजब, शाबान, रमजान, शबाल, जिलाकाद, जिलाविज्ज- ये बाहर महीने आते हैं।

### खुशी का दिन

यह खुशी खास तौर से इस्लाम भी है कि रमजान का महीना जो एक तरह से परीक्षा का महीना है, वह अल्हार के नेक बदों ने पूरी अकादित, इमानदारों व लगन से अल्हार के



रसा साहब द्वारा दरगाह की मस्जिद में हफिज

जनाब साहिज अल-साहब व तराबीह पद्धाइ गई और कुरान पाक प्रारंभिक विद्या गया। शबीना शरीफ में तीन रात में खात्म कुरान शरीफ करते। इस मोक्त पर जनें हमीद और अमें खत्म शबीना शरीफ होकर दावत सेवी होंगे जिसमें सब के लिए लालार आम चरणों। दरगाह के सज्जादा नशीन हजरत ख़्वाजा याश खाननी साहब खास दुआ करते और शहर के प्रधान लापिज साहबाव को चारत, तर्कंक और उपर दो रोजां रखा जाता है। अमर रोजे में किसी प्रकार की कोई गलती या कोताली हो जाती है, तो रोजा की गलती को सफ़ा करते कि लिए दिन निकाला जाता है। इसमें गरीबों के बीच दान किया जाता है।

### बनाएं बनारसी कलाकृतिया सेवक

गैरव सिंह, भोजपुर, बिहार के आरा में रमजान के बाद ईद आंदोलन की बाजार सेवक की खुशी से भर उठा है। मुस्लिम समाज के लोग ईद को लेकर खास तयारी करते हैं। आदित जुर्यों जहलतमन्दों को बांटी जाती है। आज आखिरी जुर्यों होने से चारों का वितरण भी होगा।

### अलग-अलग है जकात और फितरा

सहरसा बाली के बड़े मस्जिद के इमाम मौलाना सोहराब मदनी ने बताया कि जकात और फितरा दोनों अलग-अलग हैं। जकात साल में एक बार निकाला जाता है, वे बताते हैं कि अमर आके घर में साढ़े 7 तोला सोना और साढ़े 52 तोला चांदी के साथ अगर अपक घर में अधिक पैसे हैं, तो आपको 2.5% जकात निकालना जरूरी है। साथ ही खर्च एवं कर्ज चुकाने के बाद अगर एक साल के अंदर अपक पास 32000 के आसानस रकम बचता है, तो अपक ऊपर जकात निकालना फर्ज हो जाता है।

### किसे नहीं दे सकते हैं जकात



ईद-उल-फितर मुसलमानों का पवित्र त्योहार है। यह रमजान के 30 दिन के पश्चात चांद देख कर दूसरे दिन मनाया जाने वाला एक पर्व विशेष है। रमजान के पूरे महीने में मुसलमान रोजे दखकर अर्थात् भूत्याकृति के बाद ही ईद का त्योहार अर्थात् 'बहुत खुशी का दिन' मनाया जाता है। इस खुशी के दिन को ईद-उल-फितर कहते हैं।

ईद का त्योहार बहुत धूमधार से मनाया जाता है। इस दिन मुसलमान किसी पाक साफ जगह पर, जिसे ईदगाह कहते हैं, वहाँ इकट्ठ होकर यो रख आत नमाज शुरूने की आदा करते हैं। 'ए अल्हार' आपका शुरूआती कि आपने हमारी ईदबाट कबूल की। इसके शुरूआती में हम दो रेखबात ईद की नमाज

की पहली तारीख अर्थात् जिस दिन चांद दिखाई देता है, उस रोज को छोड़कर दूसरे दिन ईद का त्योहार अर्थात् 'बहुत खुशी का दिन' मनाया जाता है। इस खुशी के दिन को ईद-उल-फितर कहते हैं।

ईद का त्योहार बहुत धूमधार से मनाया जाता है।

इस दिन मुसलमान पर फिर जगह पर, जिसे ईदगाह कहते हैं, वहाँ इकट्ठ होकर यो रख आत नमाज शुरूने की आदा करते हैं। 'ए अल्हार'

आपका शुरूआती कि आपने हमारी ईदबाट कबूल की। इसके शुरूआती में हम दो रेखबात ईद की नमाज

पढ़ रहे हैं।

आप इसे बहुत भी करें। ईद की नमाज भी अल्हार की तरफ से है। ईदगाह में नमाज का हुम्म भी अल्हार तआला की तरफ से है। ईदगाह में नमाज करने के लिए जाने से मुसलमान लोग फिरता अर्थात् जान व माल का सदका, जो हर मुसलमान पर फर्ज होता है, वह गरीबों में बाहर जाता है।

मदका अल्हार ने गरीबों की इमदाद का एक तरीका सिखा दिया है। गरीब

कहते हैं।

ईद का त्योहार बहुत धूमधार से मनाया जाता है।

इस दिन मुसलमान पर फिर जगह पर, जिसे ईदगाह कहते हैं, वहाँ इकट्ठ होकर यो रख आत नमाज शुरूने की आदा करते हैं। 'ए अल्हार'

आपका शुरूआती कि आपने हमारी ईदबाट कबूल की। इसके शुरूआती में हम दो रेखबात ईद की नमाज

पढ़ रहे हैं।

आप इसे बहुत भी करें। ईद की नमाज भी अल्हार की तरफ से है। ईदगाह में नमाज का हुम्म भी अल्हार तआला की तरफ से है। ईदगाह में नमाज करने के लिए जाने से मुसलमान लोग फिरता अर्थात् जान व माल का सदका, जो हर मुसलमान पर फर्ज होता है, वह गरीबों में बाहर जाता है।

मदका अल्हार ने गरीबों की इमदाद का एक तरीका सिखा दिया है। गरीब

कहते हैं।

ईद का त्योहार बहुत धूमधार से मनाया जाता है।

इस दिन मुसलमान पर फिर जगह पर, जिसे ईदगाह कहते हैं, वहाँ इकट्ठ होकर यो रख आत नमाज शुरूने की आदा करते हैं। 'ए अल्हार'

आपका शुरूआती कि आपने हमारी ईदबाट कबूल की। इसके शुरूआती में हम दो रेखबात ईद की नमाज

पढ़ रहे हैं।

आप इसे बहुत भी करें। ईद की नमाज भी अल्हार की तरफ से है। ईदगाह में नमाज का हुम्म भी अल्हार तआला की तरफ से है। ईदगाह में नमाज करने के लिए जाने से मुसलमान लोग फिरता अर्थात् जान व माल का सदका, जो हर मुसलमान पर फर्ज होता है, वह गरीबों में बाहर जाता है।

मदका अल्हार ने गरीबों की इमदाद का एक तरीका सिखा दिया है। गरीब

कहते हैं।

ईद का त्योहार बहुत धूमधार से मनाया जाता है।

इस दिन मुसलमान पर फिर जगह पर, जिसे ईदगाह कहते हैं, वहाँ इकट्ठ होकर यो रख आत नमाज शुरूने की आदा करते हैं। 'ए अल्हार'

आपका शुरूआती कि आपने हमारी ईदबाट कबूल की। इसके शुरूआती में हम दो रेखबात ईद की नमाज

पढ़ रहे हैं।

आप इसे बहुत भी करें। ईद की नमाज भी अल्हार की तरफ से है। ईदगाह में नमाज का हुम्म भी अल्हार तआला की तरफ से है। ईदगाह में नमाज करने के लिए जाने से मुसलमान लोग फिरता अर्थात् जान व माल का सदका, जो हर मुसलमान पर फर्ज होता है, वह गरीबों में बाहर जाता है।

मदका अल्हार ने गरीबों की इमदाद का एक तरीका सिखा दिया है। गरीब

कहते हैं।

ईद का त्योहार बहुत धूमधार से मनाया जाता है।

इस दिन मुसलमान पर फिर जगह पर, जिसे ईदगाह कहते हैं, वहाँ इकट्ठ होकर यो रख आत नमाज शुरूने की आदा करते हैं। 'ए अल्हार'

आपका शुरूआती कि आपने हमारी ईदबाट कबूल की। इसके शुरूआती में हम दो रेखबात ईद की नमाज

पढ़ रहे हैं।

आप इसे बहुत भी करें। ईद की नमाज भी अल्हार की तरफ से है। ईदगाह में नमाज का हुम्म भी अल्हार तआला की तरफ से है। ईदगाह में नमाज करने के लिए जाने से मुसलमान लोग फिरता अर्थात् जान व माल का सदका, जो हर मुसलमान पर फर्ज होता है, वह गरीबों में बाहर जाता है।

मदका











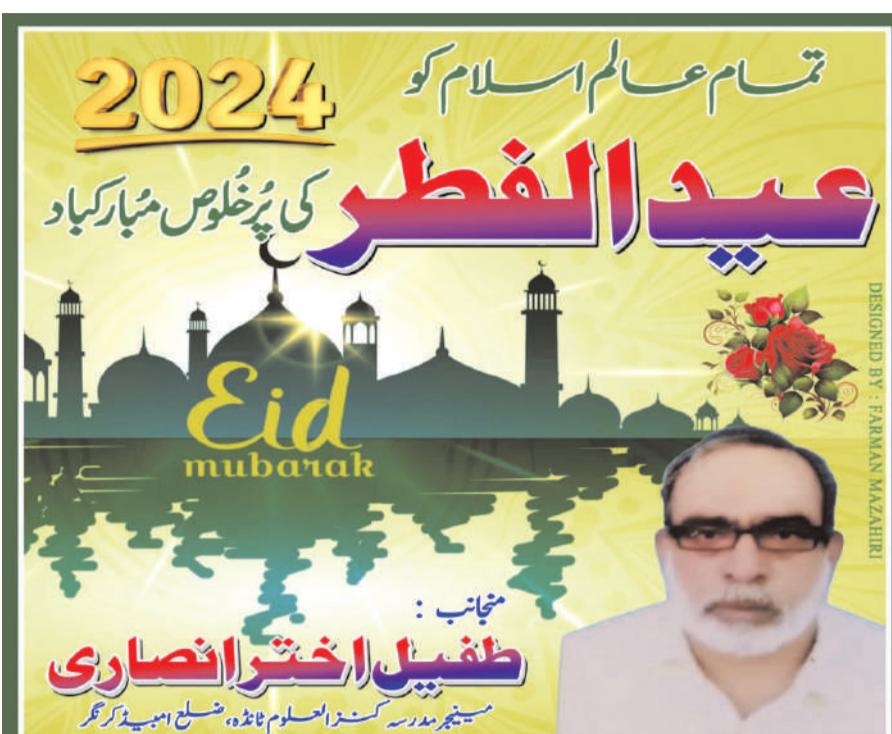
## ईद-उल-फितर की नमाज़ आज़

लखनऊ। माहे मुबारक स्वाजन के रोजों के बाद गुरुवार को ईदुल फित्र का त्योहार पूरे जाति-खातेर के साथ मनाया जाएगा। शहर की बड़ी जाति-संघों द्वारा वाली मस्जिद में सुबह 9 बजे, ऐश्वर्या ईदगाह में सुबह 10 बजे और आसिफी मस्जिद में सुबह 11 बजे अदा की जाएगी, जिसमें हजारों की संख्या में मुसलमान अपने परवानियां भी बाराह में सज्जा कर उसकी नेपारों का शुक्र अदा करेंगे। शहर के मोहल्लों पर ईदुल फित्र की नमाज अदा की जाएगी। ईदुल फित्र का त्योहार गुरुवार के शहर में हरीलला स्कैप के साथ मनाया जाएगा। शहर की मस्जिदों में अलग-अलग समय पर ईद की नमाज अदा की जाएगी, जिसके बाद लोग आपस में एक-दूसरे के गले मिल ईद की मुबारकबाद देंगे। ऐतिहासिक टीले वाली मस्जिद में मौलाना रहमान रहमान 9 बजे, ऐश्वर्या ईदगाह में इमाम ईदगाह मौलाना ख्वालिद रसीद फरंगी महली और आसिफी मस्जिद में मौलाना सरताज हैदर जैदी हजारों की संख्या में नमाजियों को ईदुल फित्र की नमाज अदा करेंगे। वहाँ शहर की अन्य मस्जिदों में भी अलग-अलग समय पर ईद की नमाज अदा की जाएगी, जिसमें शामिल होकर नमाज ईद की नमाज अदा करेंगे। शाम होते ही शुरू हुआ मुबारकबाद का सिलसिला बुधवार के मार्गिब की नमाज के बाद से ईद की मुबारकबाद का सिलसिला शुरू हो गया।

**जामा मरिजिद सहित कई मरिजियों में हुई ईद की नमाज**

लखनऊ। मौलाना सैफ अब्बास नक्काश ने बड़ी संख्या में लोगों को ईदुल फित्र की नमाज अदा कराई। तहसीनगंज के अलावा सादामगंज के दरगाह हजरत अब्बास में मौलाना मिजाज जाफर अब्बास ने नमाजियों को ईदुल फित्र की नमाज अदा कराई। इसी तरह जैए काजगंज के मरिजिद कूफा सहित इलाके की कई मस्जिदों और पुराने लखनऊ के विभिन्न मोहल्लों की मस्जिदों में शिया समुदाय को ईदुल फित्र की नमाज अदा की। हालांकि शिया समुदाय का बड़ी बांध भी बुधवार को ही ईदुल फित्र का त्योहार मनाएगा।

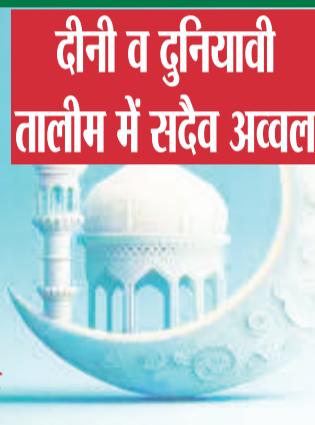
## अवधनामा के सभी सुधि पाठकों को ईद-उल-फितर की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं



**दारल उलूम मदरसा मन्ज़रे हक एवं मन्ज़रे हक निसवाँ इण्टर कालेज टाण्डा - अमबेडकर नगर की तरफ से धर्म गुरुओं समेत सभी को ईद उल फितर के मौके पर दिली मुबारकबाद**



हाजी अशफाकुल अहमद  
प्रबन्धक



हाजी शफीफुल अहमद  
सोफेटरी



लखनऊ। मंगलवार की देर रात ईद के चांद को लेकर शुरू हुए मतभेद के बाद बुधवार को शहर के कई इलाकों की मरिजिदों में शिया समुदाय ने ईदुल फित्र की नमाज अदा की। बुधवार को ईदुल फित्र की नमाज की बड़ी जमात तहसीनगंज शियत जामा मरिजिद में हुई।

**लिटिल नेस्ट पब्लिक स्कूल**  
जरावां, बाराबंकी  
की जानिब से

**ईद उल फितर की दिली मुबारकबाद**  
हिन्दी मीडियम, बेहतर शिक्षा के लिए अपने बच्चों का दाखिला जरूर करवाए।

<b>प्रवेश प्रारम्भ</b>	मोबाइल नं. 9415671546 9670300372
अली जाफर जैदी कार्यालय इंचार्ज	असद अब्बास प्रधानाचार्य

**सभी जनपदवासियों को नवरात्र व ईद की हार्दिक शुभकामनाएं**

**मोहम्मद रज्जन**  
वरिष्ठ कार्यकर्ता  
भारतीय जनता पार्टी  
लखनऊ

**सभी जनपदवासियों को नवरात्र व ईद की हार्दिक शुभकामनाएं**

**बदर अहमद**  
सभासद प्रा.  
सरावगी टोला  
महमूदाबाद  
सीतापुर

CMYK

CMYK